ग्रामीण उद्यमिता ग्रामीण विकास की रीढ़ : भारतीय संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अंकिता जांगिड़

स्वतन्त्र शोधार्थी
ankitajangid39@gmail.com

सारांश-

इस शोधपत्र में शोधार्थी ने भारत जैसे विकासशील तथा ग्रामीण जनसंख्या प्रधान देश के संदर्भ में ग्रामीण उद्यमिता की संकल्पना को कुछ विद्वानों के नवीन कार्यों के माध्यम से समझाने का प्रयास किया है कि ग्रामीण उद्यमिता के सामने भारत में क्या चुनौतियाँ हैं तथा कैसे यह विभिन्न कारकों से प्रभावित होती हुई समय के साथ ग्रामीण क्षेत्रों का मार्ग विकास की ओर उन्मुख करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में नवाचारों के बारे में बात करते हुए इससे सम्बन्धित नवीन अवधारणाओं पर भी चर्चा की गई है। शोधार्थी ने कुछ चुनिंदा शोधकार्यों को आधार बनाते हुए ग्रामीण उद्यमिता को ग्रामीण विकास की कुंजी के रूप में प्रस्तुत करते हुए भारत में ग्रामीण उद्यमिता के स्तर तथा इसके विकास हेतु सुझावों पर भी चर्चा की है।

कुंजी शब्द- ग्रामीण उद्यमिता, ग्रामीण विकास, ग्रामीण नवाचार, ग्रामीण रोजगार, ग्रामीण उद्यमी, उद्यमशीलता।

परिचय-

'एंटरप्रेन्योर' शब्द की उत्पत्ति फ्रेंच भाषा से हुई है, जिसका अर्थ है- "आरंभ करना"। व्यावसायिक संदर्भ में इसका अर्थ व्यवसाय शुरू करना होता है। मरियम-वेबस्टर शब्दकोश एक उद्यमी की परिभाषा इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि जो संगठित, प्रबंधन और किसी व्यवसाय या उद्यम के जोखिम को मानता है।

सरल शब्दों में "उद्यमिता" एक उद्यमी होने का कार्य है, जिसे "नवाचारों को आर्थिक वस्तुओं में बदलने के प्रयास में नवाचार, वित्त और व्यावसायिक कौशल का कार्य करने वाले" के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। समस्या अनिवार्य रूप से अविकास की सहवर्ती समस्याओं के साथ असंतुलित विकास है, जो किसी अन्य स्थान के विकास की कीमत पर एक क्षेत्र के विकास के रूप में होती है। उदाहरण के लिए, हमने गाँवों में अल्प-रोज़गार या बेरोज़गारी देखी है, जिसके कारण ग्रामीण आबादी शहरों की ओर बड़ी संख्या में प्रवास कर गई है। वर्तमान में आवश्यकता इस बात की है कि एक ऐसी स्थिति का निर्माण किया जाए जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन कम हो। प्रवासन हमेशा अवांछनीय नहीं होता है, लेकिन जहां तक रोजगार का संबंध है, यह न्यूनतम होना चाहिए। वस्तुत: स्थिति ऐसी होनी चाहिए कि लोग नगरों और शहरों से ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानान्तरित होने को सार्थक समझें। उद्यमशीलता दुनियाभर में आर्थिक विकास और विकास के लिए एक शक्तिशाली उत्प्रेरक के रूप में उभरी है। चूंकि यह अक्सर भीड़ भरे शहरी केंद्रों और प्रौद्योगिकी केंद्रों से जुड़ी होती है, ग्रामीण क्षेत्रों पर इसके संभावित प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। ग्रामीण विकास ग्रामीण समुदायों में आजीविका, बुनियादी ढांचे और समग्र कल्याण में सुधार की विशेषता से संबधित है और सतत विकास लक्ष्यों का एक महत्वपूर्ण घटक है। उद्यमिता जब प्रभावी रूप से उपयोग की जाती है, तो रोजगार के अवसर पैदा करके, आय पैदा करके और स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाकर ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने में एक परिवर्तनकारी भूमिका निभा सकती है।

ग्रामीण क्षेत्रों को अनूठी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है- जैसे संसाधनों तक सीमित पहुंच, अपर्याप्त बुनियादी ढांचा और भौगोलिक अलगाव, जो अक्सर उनकी आर्थिक प्रगति में बाधा बनते हैं। पारंपरिक उद्योग, जो कभी ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं की रीढ़ थे, ने हाल के वर्षों में गिरावट या ठहराव का अनुभव किया है। इस संदर्भ में, ग्रामीण विकास के लिए एक व्यवहार्य विकल्प के रूप में उद्यमशीलता का उदय ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं को पुनर्जीवित करने और ग्रामीण आबादी के लिए जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने की आशा प्रदान करता है।

भारतीय परिपेक्ष्य-

भारत जैसे विकासशील और ग्रामीण जनसंख्या प्रधान देश में ग्रामीण लोगों की बेहतरी के लिए सरकारी योजनाओं और नीतियों का उपयोग करने में कौन आवश्यक रूप से सक्षम होना चाहिए? निश्चित रूप से कुछ व्यक्ति जो NGOs और स्थानीय नेता हैं और जो ग्रामीण लोगों के लिए प्रतिबद्ध हैं, विकास के उत्प्रेरक एजेंट रहे हैं। हालांकि उनके प्रयासों को पहचानना और उनकी सराहना करना जरूरी है, फिर भी लोगों के आंदोलन की दिशा को उलटने के लिए बहुत कुछ करने की आवश्यकता है, अर्थात लोगों को ग्रामीण क्षेत्रों में आकर्षित करने के लिए जिसका अर्थ न केवल ग्रामीण लोगों के बहिर्वाह को रोकना है, बल्कि उन्हें शहरों से वापस आकर्षित करना भी है। ग्रामीण क्षेत्रों में सभी अपर्याप्तताओं और दक्षताओं के बावजूद उनकी शक्ति का आंकलन करना चाहिए और ग्रामीण क्षेत्रों को अवसरों का स्थान बनाने के लिए उनका निर्माण भी करना चाहिए। लेकिन विभिन्न संकलनों के कारण वे अपना विचार बदलते हैं और नौकरी चाहने वालों के दल में शामिल हो जाते हैं। जनता को सकारात्मक और रचनात्मक रूप से सोचने में सक्षम बनाना और उन्हें उद्यमिता गतिविधियों में उद्देश्यपूर्ण ढंग से शामिल करना ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। इस तरह के दृष्टिकोण के साथ युवा लोग और सही दिशाबद्ध प्रयासों की मदद से निश्चित रूप से ग्रामीण उद्यमिता के युग में प्रवेश करेंगे। ग्रामीण विकास के लिए लागू किए जा सकने वाले उद्यमी के कुछ बुनियादी सिद्धांत निम्न होते हैं-

1. ग्रामीण आबादी द्वारा एक उद्यमशीलता उद्यम में स्थानीय संसाधनों का इष्टतम और पूर्ण उपयोग,
2. कृषि उपज के बेहतर वितरण से ग्रामीण समृद्धि में परिणाम,
3. ग्रामीण आबादी के लिए उद्यमशीलता के व्यवसाय के अवसर के भेदभाव को कम करना और ग्रामीण प्रवासन के खिलाफ वैकल्पिक व्यवसाय भी प्रदान करना,
4. ग्रामीण आबादी को बुनियादी जनशक्ति, धन सामग्री, प्रबंधन, मशीनरी और बाजार प्रदान करने के लिए ऐसी प्रणाली को सक्रिय करना।

उद्देश्य-

इस शोध पत्र का प्राथमिक उद्देश्य उन शोधों/साहित्यों का अध्ययन कर भारत में ग्रामीण उद्यमिता की चुनौतियों पर चर्चा करना है, जो ये पता लगाते हैं कि भारत में ग्रामीण उद्यमिता और ग्रामीण विकास के बीच सम्बन्ध कैसे हैं तथा इस सम्बंध को कमजोर करने वाली समस्याएं कौनसी हैं? इस अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण विकास में उद्यमिता की भूमिका तथा भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी चुनौतियों की व्यापक समझ प्रदान करना है।

विधि-

साहित्य समीक्षा की यह गुणात्मक अंतर्दृष्टि वास्तविक दुनिया के दृष्टिकोण और अनुभव बताती है, जो ग्रामीण उद्यमिता से जुड़ी चुनौतियों और अवसरों की गहरी समझ प्रदान करते हैं।

महत्व-

यह शोधपत्र भारत में ग्रामीण उद्यमिता और ग्रामीण विकास के सम्बन्धों तथा चुनौतियों पर किये गए कार्यों का अध्ययन करके ज्ञान के मौजूदा निकाय में योगदान देता है। यह शोधपत्र ग्रामीण आर्थिक विकास, सामाजिक सशक्तिकरण और सतत विकास के चालक के रूप में ग्रामीण उद्यमिता की क्षमता के बारे में नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं और प्रशासन को सूचित करना चाहता है। साहित्यों और चुनौतियों की गहन खोज के माध्यम से, इस अध्ययन का उद्देश्य देशभर में ग्रामीण उद्यमिता की चुनौतियों से उच्चाधिकारियों को अवगत कराना तथा ग्रामीण समुदायों के लाभ के लिए ग्रामीण उद्यमिता की अप्रयुक्त क्षमता को कैसे उजागर किया जाए, इस पर कार्रवाई को प्रेरित करना और संवाद को प्रोत्साहित करना है।

विश्लेषण-

राजवंशी (2022) अपने एक शोधपत्र में बताते हैं कि ग्रामीण उद्यमिता एक नए उद्यम के प्रचार को संदर्भित करता है, जो नए उत्पादों/सेवाओं का विकास ग्रामीण/सुदूर क्षेत्रों में नवीनतम प्रौद्योगिकी की पेशकश और उपयोग के लिए नया बाजार सृजित करता है। दूसरे शब्दों में ऐसी उद्यमिता जो गैर-शहरी क्षेत्रों में विकसित होती है, ग्रामीण उद्यमिता कहलाती है। ग्रामीण उद्यमिता आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी से ग्रामीण क्षेत्र में बेरोजगारी की तीव्रता को कम करती है। वे आगे बताते हैं कि यह उद्यमिता विभिन्न प्रकार की हो सकती है, जैसे- कृषि उद्यमिता, जनजातीय उद्यमिता, कारीगर उद्यमिता आदि।

कुमार (2016) और सैकिया (2019) ने बताया कि वैश्वीकरण के युग में, ग्रामीण संदर्भ में उद्यमिता विकास एक चुनौती है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में 68.84 प्रतिशत लोग रह रहे हैं। अपने-अपने अध्ययन में लेखकगण ग्रामीण उद्यमिता को ग्रामीण स्तर पर उभरती हुई उद्यमिता के रूप में परिभाषित करते हैं, जो व्यापार, उद्योग, कृषि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में हो सकती है और आर्थिक विकास के लिए एक शक्तिशाली कारक के रूप में कार्य कर सकती है। उन्होंने बताया कि भारत में छोटे और मध्यम उद्यमों (SMEs) में ग्रामीण उद्यमिता के लिए बहुत संभावनाएं हैं, जो ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबों और बेरोजगारों के लिए रोजगार और आय प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ग्रामीण उद्यमी गांवों में लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान करके लोगों के जीवन स्तर और क्रय शक्ति को बढ़ाते हैं।सकल घरेलू उत्पाद के 52 % से अधिक और भारत में सभी श्रम शक्ति के 75 % से अधिक को उपलब्ध कराने पर विचार करते हुए, ग्रामीण क्षेत्र लघु और मध्यम उद्योग क्षेत्र में तेजी से विस्तार के लिए सबसे अच्छी स्थिति में है। ग्रामीण क्षेत्रों में लोग बेरोजगारी, खराब बुनियादी सुविधाओं से पीड़ित हैं, जिसे ग्रामीण उद्यमियों के विकास के साथ हल किया जा सकता है। हालांकि, ग्रामीण उद्यमी जोखिम के डर, वित्त की कमी, सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान और तकनीकी कौशल की कमी, खराब गुणवत्ता वाले उत्पादों, प्रतिकूल सामाजिक, सांस्कृतिक और औद्योगिक वातावरण, शहरी उद्यमियों से प्रतिस्पर्धा जैसी विभिन्न समस्याओं से जूझ रहे हैं। उनका शोधपत्र भारत में ग्रामीण विकास के संदर्भ में ग्रामीण उद्यमिता के महत्व, समस्याओं और चुनौतियों को समझने का एक प्रयास है, जिसमें समस्याओं को दूर करने के लिए संभावित सुझाव दिए गए हैं।

पटेल-चावड़ा (2013), जयादत्ता (2017) और सथ्या (2019) भारत में ग्रामीण उद्यमिता पर अपने-अपने अध्ययन में बताते हैं कि ग्रामीण उद्यमिता इन दिनों उन लोगों के लिए एक प्रमुख अवसर है जो ग्रामीण क्षेत्रों या अर्ध-शहरी क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में प्रवास करते हैं। इसके विपरीत यह भी एक तथ्य है कि भारत जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक सुविधाओं की अनुपलब्धता के कारण कई समस्याएं हैं, जिनका सामना अधिकांश ग्रामीण उद्यमी कर रहे हैं। वित्तीय समस्याएं, शिक्षा की कमी, अपर्याप्त तकनीकी और वैचारिक क्षमता के चलते वर्तमान में ग्रामीण उद्यमियों के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में उद्योग स्थापित करना बहुत कठिन है। निश्चित रूप से हमारे देश का आर्थिक विकास काफी हद तक ग्रामीण क्षेत्रों के विकास और इसके ग्रामीण जन में जीवन स्तर पर निर्भर करता है। ये शोधपत्र उद्यमशीलता में ग्रामीण क्षमता के लिए चुनौतियों और समस्याओं का पता लगाने का प्रयास करता है। ये उद्यमियों के सामने आने वाली प्रमुख समस्याओं जैसे उत्पादों के विपणन के क्षेत्र में, अन्य प्राथमिक सुविधाएं- जैसे पानी की आपूर्ति, बिजली, परिवहन सुविधाओं, आवश्यक ऊर्जा और वित्तीय सुविधाओं की उपलब्धता पर भी ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करता है।

जयादत्ता बताती हैं कि किसी देश और देश के भीतर क्षेत्रों के आर्थिक विकास के लिए ग्रामीण उद्यमी निश्चित रूप से सबसे महत्वपूर्ण आदानों में से एक है। आज उद्यमियों को सपने देखने वाले, नेता, प्रबंधक, नवप्रवर्तक, निरंतर सीखने वाले और निर्णय लेने वाले गुणों के साथ-साथ अपने व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने के लिए भी प्रेरित किया जाता है और इन सभी गुणों को कार्य में लागू करना सबसे महत्वपूर्ण है। निश्चित रूप से उद्यमियों ने अपने सपने को हकीकत में बदलने की मिसाल पेश की है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि सपनों को साकार करने के पीछे की कहानी अपने लिए बड़े पैमाने पर लक्ष्य निर्धारित करना और लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बेजोड़ जुनून और महत्वाकांक्षा के रास्ते में आने वाली बाधाओं की परवाह किए बिना उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध रहना है। उद्यमियों की कहानियां सुनने के बाद निस्संदेह यह आकर्षक और प्रेरक लगता है, लेकिन निश्चित रूप से सफलता उतनी आसान नहीं है जितनी हमेशा दिखती है। निश्चित रूप से कुछ बाधाएँ हैं जिन्हें हम एक सफल उद्यमी बनने की संभावनाओं को देखते हुए दूर करने के लिए चुनौतियाँ कहते हैं। इन शोधपत्रों में एक सक्षम और सफल उद्यमी बनने के लिए इसकी संभावनाओं को उजागर करके प्रमुख चुनौतियों और समस्याओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

अग्रवाल (2018) के शब्दों में उनके शोधपत्र का उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में जमीनी स्तर पर उद्यमशीलता के दृष्टिकोण की आवश्यकता और प्रासंगिकता की सराहना करना रहा। वे आगे बताते हैं कि इन दिनों ग्रामीण उद्यमिता को ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में सबसे बड़ी शक्ति के रूप में देखा जाता है। वास्तव में, दुनिया के कई विकासशील देशों ने ग्रामीण उद्यमशीलता की अवधारणा

का उपयोग ग्रामीण अशांति को दूर करने के एक बहुत ही सफल तरीके के रूप में किया है। उद्यमशीलता, ग्रामीण विकास के लिए स्थानीय उद्यमशीलता प्रतिभा और स्वदेशी कंपनियों के अभिविन्यस्थ विकास को प्रोत्साहित करने पर आधारित है। इस संदर्भ में, ग्रामीण भारत के लिए एक सामरिक विकास हस्तक्षेप के रूप में एक उद्यमशीलता परिप्रेक्ष्य ग्रामीण लोगों, विशेष रूप से शिक्षित और बेरोजगार ग्रामीण लोगों के सामाजिक-आर्थिक कल्याण को बढ़ाने के साधन के रूप में देश में सरकार और युवा शोधकर्ताओं के लिए बहुत रुचि का विषय है। यह पत्र ग्रामीण उद्यमिता के बारे में ज्ञान के मौजूदा निकाय में योगदान देने का प्रयास करता है, जो कि बिखरे हुए रूप में मौजूद है और भारतीय परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण उद्यमिता और ग्रामीण उद्यमिता विकास के प्रयासों के प्रचलित दर्शन के वैचारिक ढांचे को प्रस्तुत करके जागरूकता को व्यापक बनाने का प्रयास करता है। अग्रवाल का यह शोधपत्र संबंधित लोगों को उद्यमशीलता, भारत में ग्रामीण उद्यमिता विकास की स्थिति, ग्रामीण उद्यमिता विकास योजनाओं और कार्यक्रमों के रूप में वर्तमान पहल और ग्रामीण उद्यमिता विकास के लिए संस्थागत नेटवर्क के विकास के बारे में एक समग्र दृष्टिकोण देने में सक्षम है।

कुशालक्षी और रघुरामा (2014) ग्रामीण उद्यमिता पर अपने अध्ययन में बताते हैं कि चूंकि भारत में अधिकांश जनसंख्या गांवों में निवास करती है, अतः गांव देश की रीढ़ की हड्डी है। ग्रामीण या ग्रामीण उद्योग राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में, विशेष रूप से ग्रामीण विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ग्रामीण उद्यमिता न केवल कम पूंजी लागत वाले ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा करने और लोगों की वास्तविक आय बढ़ाने के साधन के रूप में महत्वपूर्ण है, बल्कि कृषि और शहरी उद्योगों के विकास में भी इसका योगदान है। लेखकगण बताते हैं कि ग्रामीण उद्यमिता को गरीबी, पलायन, आर्थिक असमानता, बेरोजगारी को कम करने और ग्रामीण क्षेत्रों और पिछड़े क्षेत्रों को विकसित करने के समाधानों में से एक माना जा सकता है।

शर्मा और अन्य (2013) के अनुसार एक उभरता हुआ साहित्य बताता है कि संकटग्रस्त क्षेत्रों में मजबूत संरचना एक विशेषता होती है, जिन्हें उद्यमशीलता गतिविधियों के लिए सामाजिक पूंजी के रूप में बढ़ावा दिया जा सकता है। उद्यमिता का अर्थ है वर्तमान में नियंत्रित संसाधनों की परवाह किए बिना अवसर की खोज अर्थात् उद्यमिता एक विशेष प्रकार का प्रबंधकीय व्यवहार है जो सभी प्रकार और आकारों के संगठनों में लगभग सभी प्रबंधकों के लिए उपलब्ध है। उनका यह शोधपत्र भारत जैसे विकासशील देशों में ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यमशीलता गतिविधियों के लिए देखी गई चुनौतियों की जांच करता है। साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में एक उद्यम स्थापित करने के लिए ग्रामीण उद्यमियों के सामने आने वाली समस्याओं पर भी चर्चा की जाती है, ताकि इन समस्याओं की सावधानीपूर्वक पहचान की जा सके और उन्हें ठीक किया जा सके, ताकि वहां उपलब्ध संसाधनों का दोहन किया जा सके जो ग्रामीण क्षेत्रों से रोजगार सुविधाओं के सृजन द्वारा वित्तीय सहायता की तलाश में लोगों के प्रवास को भी कम करेगा। ग्रामीण उद्यमिता के प्रदर्शन मूल्यांकन के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों को भी सूचीबद्ध किया गया है।

सक्सेना (2012) और जेबदुराई (2013) ने अपने अध्ययन में बताया है कि भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 69% ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है जहाँ कृषि और संबद्ध गतिविधियाँ उनके जीवन का मुख्य आधार हैं। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में लोग बेरोजगारी और खराब बुनियादी सुविधाओं से पीड़ित हैं, जिसे ग्रामीण उद्यमियों के विकास के साथ हल किया जा सकता है। ग्रामीण उद्यमी दुर्लभ संसाधनों का सबसे कुशल तरीके से उपयोग करते हैं जिससे मुनाफा बढ़ता है और लागत कम होती है।वे स्थानीय संसाधनों का उपयोग करके ग्रामीण क्षेत्रों में व्यवसाय करते हैं, लेकिन यह ग्रामीण उद्यमी जोखिम के डर, वित्त की कमी, अशिक्षा और शहरी उद्यमियों से प्रतिस्पर्धा जैसी विभिन्न समस्याओं से जूझ रहे हैं। वित्त और कच्चे माल की कमी ग्रामीण उद्यमियों की मुख्य समस्याएँ हैं। अधिकांश ग्रामीण उद्यमियों को निरक्षरता, जोखिम का डर, प्रशिक्षण और अनुभव की कमी, सीमित क्रय शक्ति और शहरी उद्यमियों से प्रतिस्पर्धा जैसी विशेष समस्याओं का सामना करना पड़ता है।ग्रामीण उद्यमी गांवों में लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान करके लोगों के जीवन स्तर और क्रय शक्ति को बढ़ाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों और पिछड़े शहरों को विकसित करने के लिए ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। इनके अध्ययन उद्यमियों के सामने आने वाली समस्याओं का अध्ययन करते हैं और समस्याओं को दूर करने के लिए संभावित अनुशंसा करते हैं।

निष्कर्ष-

उक्त साहित्यों के अध्ययन से शोधार्थी इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि उद्यमशीलता आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करके, रोजगार के अवसरों को बढ़ाकर और स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाकर ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह शोधपत्र भारत में उद्यमशीलता और ग्रामीण विकास के बीच संबंधों के प्रमुख कारकों, चुनौतियों और ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यमशीलता की गतिविधियों के प्रभावों पर प्रकाश डालता है। मौजूदा साहित्यों की जांच करके, यह शोधपत्र बताता है कि कैसे भारत के ग्रामीण निवासी उद्यमिता से डरते हैं तथा इसका जोखिम उठाने में अक्षम हैं। यह शोधपत्र उन समस्याओं पर प्रकाश डालता है जो भारत में ग्रामीण उद्यमिता के समक्ष खड़ी हैं। यह उन रणनीतियों और नीतियों में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है जो प्रभावी रूप से उद्यमशीलता को बढ़ावा देकर सतत ग्रामीण विकास को बढ़ावा दे सकती हैं। यह शोधपत्र ग्रामीण उद्यमशीलता के लिए एक सक्षम वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण कारकों के रूप में पारिस्थितिकी तंत्र, वित्त तक पहुंच, क्षमता निर्माण पहल और नवाचार के महत्व को रेखांकित करता है। यह शोधपत्र नीति निर्माताओं, हितधारकों और उद्यमियों के लिए ग्रामीण विकास और ग्रामीण समुदायों के समग्र कल्याण को बढ़ाने के लिए एक उपकरण के रूप में उद्यमशीलता का लाभ उठाने के लिए सुझावों के साथ समाप्त होता है।

सन्दर्भ-

1. Aggarwal, A. K. (2018). The Empirical Perspectives on Rural Entrepreneurship Development in India. https://ssrn.com/abstract=3184142
2. Jayadatta S. (2017). Major Challenges and Problems of Rural Entrepreneurship in India. IOSR Journal of Business and Management (IOSR-JBM). Volume 19, Issue 9. Ver. II, 35-44.
3. Jebadurai, J. (2013). AN OVERVIEW OF PROBLEMS OF RURAL ENTREPRENEURS IN INDIA. International Journal of Advanced Research in Management and Social Sciences, Vol. 2, No. 7, 202-208.
4. Kumar, S.V. (2016). Rural Development in India through Entrepreneurship : An Overview of the Problems and Challenges. Anveshana, 6:2, 32-52.
5. Kushalakshi & Raghurama, A. (2014). Rural Entrepreneurship : A Catalyst for Rural. International Journal of Science and Research (IJSR), Volume 3 Issue 8, 51-54.

6. Patel, B. & Chavda, K. (2013). Rural Entrepreneurship in India : Challenge and Problems. International Journal of Advance Research in Computer Science and Management Studies. 28-37.
7. Rajvanshi, V.K. (2022). Rural Entrepreneurship: Need of the Day. Asian Journal of Management and Commerce, 3(1), 125-127.
8. Saikia, A. (2019). RURAL DEVELOPMENT IN INDIA THROUGH ENTREPRENEURSHIP. International Journal of Social Science and Economic Research. Volume 04, Issue 04, 2920-2929.
9. Sathya, I. (2019). RURAL ENTREPRENEURSHIP IN INDIA. RESEARCH EXPLORER-A Blind Review & Refereed Quarterly International Journal. Volume VII, Issue 2, 7-12.
10. Saxena, S. (2012). Problems Faced By Rural Entrepreneurs and Remedies to Solve It. IOSR Journal of Business and Management (IOSR-JBM). Volume 03, Issue 1, 23-29.
11. Sharma, M., Chaudhary, V., Rajnibala & Chauhan, R. (2013). Rural Entrepreneurship in Developing Countries : Challenges, Problems and Performance Appraisal. Global Journal of Management & Business Studies. Volume 3, Number 9, 1035-1040.